2 सितम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर-टोडरमल स्मारक भवन (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित शांतिकुमाजी पाटील द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचन, दोपहर में छात्र प्रवचन एवं श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा छहढाला पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित अरुणजी शास्त्री द्वारा समयसार व कु.प्रतीति पाटील द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

सुगन्ध दशमी के दिन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर, टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान महिला मंडल बापूनगर द्वारा **'पश्चाताप'** विषय पर आकर्षक झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000-2500 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की।

विधि-विधान के कार्य पण्डित रुपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

(2) जयपुर के विभिन्न उपनगरों में पर्व के अवसर पर जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी पंचायती बड़े मन्दिर में प्रात: डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर एवं सायंकाल प्रोजेक्टर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के वीडियो प्रवचन, आदर्शनगर स्थित मुल्तान दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, सी-स्कीम स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, सी-स्कीम स्थित सेठी चैत्यालय में पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, प्रतापनगर में पण्डित मनीषजी शास्त्री 'कहान', श्री दिगम्बर जैन खजांची की नसियां में पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, जगतपुरा में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, शक्तिनगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर एवं सिवाड़ मन्दिर में पण्डित शुभमजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

(दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा 500 से अधिक विद्वान देश-विदेश के विभिन्न स्थानों पर प्रवचनार्थ भेजे गये हैं, जिनके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।)

कोहेफिजा-भोपाल में -

परमागम ऑनर्स के नवीन बैच की घोषणा

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर कोहेफिजा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में चल रहे कल्पद्रुम महामंडल विधान के अवसर पर श्री आराध्य टडैया मुम्बई द्वारा परमागम ऑनर्स भोपाल (टोडरमल स्मारक जयपुर से संबद्ध पंचवर्षीय जैनदर्शन अध्ययन कोर्स) के द्वितीय बैच की घोषणा की गई।

समवशरण मंदिर चौक बाजार की भांति कोहेफिजा मन्दिर में भी सप्ताह में एक दिन (रविवार प्रात:काल) 2 घंटे की कक्षा आयोजित होगी। प्रथम सेमेस्टर की कक्षायें दशलक्षण पर्व के तुरंत बाद प्रारंभ हो जायेगी। भोपाल या भोपाल के बाहर के जो भी विद्यार्थी पिछले बैच में प्रवेश नहीं ले पाये हैं, वे इस नवीन बैच में प्रवेश हेतु अपना नाम, पिता/पति का नाम, पता, जन्मतिथि व मोबाइल नं. निम्न संपर्क सूत्रों पर दर्ज कराएं -

संपर्क सूत्र - बैच अध्यापक-प्रो. पुनीत मंगलवर्धिनी (7415111700), बैच टीम लीडर - श्री मोहित बड़कुल (9993389996)

तत्त्वज्ञान शिविर संपन्न

गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण पर्व के पूर्व पाँच दिवसीय तत्त्वज्ञान शिविर का आयोजन हुआ, जिसके अन्तर्गत पण्डित गुलाबचंदजी बीना द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में शंका-समाधान एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। **- सचिन्द्र शास्त्री**

जिनागम के गूढ रहस्य समझने का -

स्वर्णिम अवसर

दिनांक 17 से 24 सितम्बर 2017 तक आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर की विस्तृत पत्रिका पृष्ठ 4-5 पर प्रकाशित है। इस वर्ष शिविर में जैनदर्शन के विशिष्ट विद्वानों द्वारा कक्षाओं के माध्यम से जिनागम के अनेक गूढ रहस्यों को गहराई से समझने का अपूर्व लाभ मिलने वाला है। अत: विद्वानों के विषय देखकर आप किन-किन कक्षाओं में लाभ लेना चाहते हैं, इसकी पूर्व सूचना अवश्य दे देवें। शिविर के अन्त में सभी विषयों की परीक्षा भी ली जायेगी। **- महामंत्री**

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक सदस्य ने विनम्रता से कहा ''भाई ! बात तो तुमने ठीक ही कही है, पर धर्म ही तो सारे झगड़ों की जड़ है। देखो न आज मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, जो धर्मस्थल कहलाते हैं, सब युद्धस्थल बने हुये हैं। इससे तो हम अधार्मिक लोग ही अच्छे हैं न ?''

''नहीं भाई, ऐसी बात नहीं है। झगड़े धर्म से नहीं, धर्मान्धता से होते हैं। धर्म तो वीतरागता का दूसरा नाम है। क्या वीतरागी भी कभी किसी से झगड़ा-फसाद करते हैं ? धर्म की बातें तो बहुत लोग करते हैं, पर धर्म के रहस्य को बहुत कम लोग जानते हैं। धर्म की यथार्थ स्थिति को लोग जाने-पहिचाने, इसके लिये ही तो आज हम यह संगठन बना रहे हैं।

वैसे देश में न तो युवाओं की कमी है और न युवा संगठनों की। पर वे सब संगठन शासन और समाज के लिये सिरदर्द बने हुए हैं, समस्या बने हुये हैं। नित्य नये आन्दोलन छेड़ना, तोड़फोड़ करना, बसों, रेलों और कल-कारखानों में आग लगाना, लाखों की संख्या में जन-धन की हानि करना-कराना ही जिनका काम है।

परन्तु यह संगठन जनता में अशान्ति की आग लगाने वाला नहीं, वरन् शान्ति, समता और अहिंसकक्रान्ति की शीतल अमृतधारा बहाकर उस अशान्ति की आग को बुझाने वाला संगठन होगा, तोड़फोड़ करने वाला नहीं, धर्म-स्नेह के धागे से समाज को एवं राष्ट्र को जोड़ने वाला संगठन होगा।

यह जन-जन में धार्मिक भावना भरने वाला, दुराचार से हटाकर सदाचार के मार्ग पर लाने का रचनात्मक काम करने वाला संगठन होगा।

इस संगठन ने संरक्षक के रूप में डॉ. धर्मचन्द जैसे समाज के सेवाभावी वयोवृद्ध व्यक्तियों का मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त करने का लक्ष्य भी रखा है; क्योंकि काम करने के लिए जहाँ युवाओं का जोश चाहिए वहाँ वृद्धों का होश भी चाहिए। युवकों में जोश तो बहुत होता है, पर होश की कमी रहती है। इसके विपरीत बुजुर्गों में होश बहुत है, वे सोचते बहुत हैं, परन्तु उनकी भुजाओं में अब काम करने की ताकत नहीं रही। अत: युवकों का जोश और वृद्धों का होश मिलकर समाज में नई चेतना लाने वाला यह संगठन अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगा - ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

हमारे इस संगठन में एक महिला विभाग भी रहेगा, जिसका नेतृत्व हमारी भाभी श्रीमती विद्या, सुनीता एवं सरला करेंगी।''

प्रो. ज्ञान ने बैठक बुलाने का उद्देश्य बताकर अगले वक्ता को बुलाते हुए कहा -''अब मैं आदरणीय विद्या भाभी से भी विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे भी अपने विचार रखें।''

''आदरणीय पितातुल्य आज के अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्दजी, धर्मबन्धु प्रो. ज्ञानजी, मि. सुदर्शन एवं उपस्थित सज्जनों और माता बहिनों ! मैं इस अवसर पर केवल इतना कहना चाहूँगी कि संसारी प्राणियों को इस संसार में परिभ्रमण करते हुए यह दुर्लभ, अमूल्य मनुष्य पर्याय, उत्तम कुल और जिनवाणी सुनने-समझने का सौभाग्य बड़ी मुश्किल से मिलता है। यदि यह एक बार हमारे हाथ से यों ही खाते-कमाते और रोते-गाते निकल गया तो इसका बार-बार मिलना कठिन ही नहीं, असंभव है।

इस संदर्भ में कविवर दौलतरामजी के छहढाला ग्रंथ की निम्नांकित पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं। वे लिखते हैं -

यह मानुष पर्याय सुकुल सुनवो जिनवाणी,
इस विधि गये न मिले सुमणि ज्यों उदधि समानी।

इसलिए मैं तो केवल इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ कि 'यह संगठन समय-समय पर जो भी आयोजन करे, कार्यक्रम बनाये, हम उसमें समर्पण भाव से अपना सहयोग दें और इसके धार्मिक आयोजनों का भरपूर लाभ उठायें।

जीवन में यदि कुछ प्राप्त करने लायक है तो वह केवल धर्म ही प्राप्त करने लायक है। और तो हम सब कुछ अनेक बार प्राप्त कर चुके हैं, यदि नहीं किया है तो एक धर्माचरण नहीं किया है, अन्यथा वर्तमान में हमें ये दु:खद दिन नहीं देखने पड़ते। यह संगठन अपने उद्देश्य में सफल हो इस शुभकामना के साथ मैं यह विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि मेरा इसमें तन-मन-धन से पूरा सहयोग और समर्पण रहेगा। मुझसे जो कुछ भी बन सकेगा, मैं इसके लिए करती रहूँगी।'

विद्या जैन की इस मार्मिक अपील ने धर्म से सर्वथा अपरिचित व्यक्तियों के हृदय में भी जैनतत्त्व को जानने-समझने की जिज्ञासा

एवं धर्म को धारण करने की रुचि के बीज बो दिए।

एक जिज्ञासु ने विनम्रतापूर्वक कहा -''धर्माचरण की बातें तो सब करते हैं, पर धर्म क्या है और कैसे प्राप्त होता है ? यह आज तक समझ में नहीं आया। क्या आप में से कोई हमें संक्षेप में और सरल भाषा में धर्म का स्वरूप समझाने की कृपा करेंगे?''

प्रो. ज्ञान ने कहा -''हाँ ! हाँ !! आपकी जिज्ञासा को तृप्त करने की कोशिश करना हमारा कर्तव्य है। हम आपको धर्म का यथार्थ स्वरूप समझाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करेंगे, पर कह नहीं सकते, अभी एकाध घण्टे में कितना/क्या समझा पायेंगे और आप भी कितना/क्या ग्रहण कर पायेंगे ? इसके लिए तो आपको कुछ दिन तक नियमित रूप से प्रतिदिन एक घंटे का समय निकालना होगा, तब कहीं धर्म का सही स्वरूप समझ में आ पायेगा। यदि आप समय पर आ सकें तो हम तो कल से ही धर्म के स्वरूप को विस्तार से समझाने के लिए एक प्रौढ कक्षा का कार्यक्रम प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रवचन तो प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में होता ही है, प्रवचनों में भी आप सादर आमंत्रित हैं।''

प्रो. ज्ञान ने राजेश शास्त्री को आह्वान करते हुए कहा - ''अब मैं युवा विद्वान पण्डित राजेश शास्त्री, जिन्हें हम प्यार से 'राजू' कहते हैं, से अनुरोध करता हूँ कि वे आगे आयें और संक्षेप में बोलचाल की भाषा में धर्म का मर्म समझाने का कष्ट करें।''

पण्डित राजेश शास्त्री का सामान्य परिचय देते हुए प्रो. ज्ञान ने आगे कहा -''पण्डित राजेश शास्त्री के विषय में मैं कहना तो बहुत कुछ चाहता था, पर समयाभाव के कारण अभी मात्र इतना बताकर संतोष कर रहा हूँ कि शास्त्रीजी हमारे श्रद्धेय डॉक्टर धर्मचन्द जैन के ही होनहार सुपुत्र और हमारे बचपन के सहपाठी एवं मित्र हैं। जो कभी राजू के नाम से जाने-पहचाने जाते थे। इन्होंने पांच वर्ष पूर्व जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लिया था। महाविद्यालय के वातावरण से इनके जीवन का पूर्ण कायाकल्प तो हुआ ही, इन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने माता-पिता को ढेरों खुशियाँ भी दीं और हमारे नगर का भी गौरव बढाया है।''

पण्डित राजेश शास्त्री ने अपने वक्तव्य में स्वामी समन्तभद्राचार्य के रत्नकरण्डश्रावकाचार में आये धर्म के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा -''सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को ही तीर्थंकर भगवान ने धर्म कहा है और इससे उल्टे मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र अधर्म है। धर्म जीवों को संसार के दु:खों से निकालकर उत्तम सुख में पहुँचाता है और अधर्म प्राणियों को संसार के दु:खसागर में डुबा देता है।

यहाँ कोई कह सकता है कि -'आप यह क्या कह रहे हैं? यह तो हम आपसे पहली बार सुन रहे हैं। ये सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र क्या वस्तु है ? और इनसे धर्म का क्या सम्बन्ध है?

हमें तो हमारे माता-पिता और पूर्वजों ने यह बताया था कि प्रतिदिन प्रात:काल सूर्योदय के पूर्व उठते ही नौ बार णमोकार मंत्र पढना चाहिए, अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिए, नित्यकर्म से निवृत्त होकर मंदिर जाकर अपनी सुविधानुसार दर्शन-पूजन भी करना चाहिए। धार्मिक पर्वों पर विशेष पूजन-पाठ करना चाहिए। समय-समय पर शास्त्रों में बताये अनुसार व्रत-उपवास, दान-पुण्य एवं तीर्थयात्राओं के कार्यक्रम भी बनाते रहना चाहिए। सो वह सब हम अपनी शक्ति व भक्ति के अनुसार बराबर कर रहे हैं।

हमारे पूर्वज यह भी कहा करते थे कि यह सब करते हुए न्याय-नीति से अपने गृहस्थोचित कर्तव्यों का पालन करना भी गृहस्थों का धर्म है। आत्मा की साधना-आराधना करना तो साधु-संतों का काम है।

हमारी कुल परम्परा में तो यही सब पीढियों से होता आया है और हाँ उन्होंने यह भी बताया था कि जैन लोग रात्रिभोजन नहीं करते, अनछना पानी काम में नहीं लेते, जमीकन्द नहीं खाते, मद्य-मांस-मधु का सेवन नहीं करते, कोई दुर्व्यसन भी जैनी में नहीं होता। जो लोग सामान्य सदाचार का पालन नहीं करते वे तो नाममात्र के भी जैन नहीं हैं।

उनका यह भी कहना था कि जैन कोई जाति नहीं है; जो इन्द्रियों और मोह-राग-द्वेष को जीतता है, अहिंसात्मक आचरण करता है, वही जैन है। इसलिए हम अपनी कुल परम्परा से चली आई इन सभी धार्मिक क्रियाओं को दृढता के साथ पालन करते हैं। हमारे पूर्वजों ने तो हमें यही सब बताया है; पर आप तो हमें धर्म का स्वरूप कुछ अलग ही बता रहे हैं। हमारी इन क्रियाओं में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की बात तो कहीं आई ही नहीं है ? हम जो करते हैं, क्या वह धर्म नहीं है ? **(क्रमश:)**

पधारिये!! अवश्य पधारिये!!! !!!श्री वीतरागाय नमः!!! तत्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिये!!!

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

20वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

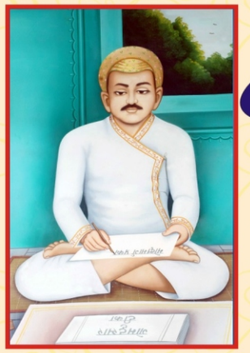

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर श्री टोडरमलजी

आमंत्रण पत्रिका

रविवार, दिनांक 17 सितम्बर 2017 से रविवार, दिनांक 24 सितम्बर, 2017 तक

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की श्रृंखला का बीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 17 सितम्बर 2017 से रविवार, दिनांक 24 सितम्बर, 2017 तक अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे। डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में बालकक्षा का आयोजन होगा।

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में अनेक विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जायेगा।

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

रविवार, दिनांक 17 सितम्बर 2017, प्रात: 8:00 बजे

अध्यक्ष	: श्री अशोकजी पाटनी, सिंगापुर
ध्वजारोहणकर्त्ता	: श्री निहालचंदजी जैन, जयपुर
प्रवचन मंडप उद्घाटनकर्त्ता	: श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत एवं श्री इन्द्रचंदजी कटारिया, जयपुर
मंच एवं शिविर उद्घाटनकर्त्ता	: श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
मुख्य अतिथि	: श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ
विशिष्ट अतिथि	: श्री संजयजी दीवान, सूरत
आ.कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्त्ता	: डॉ. अरविन्दजी दोशी, गोंडल
आ. धरसेन के चित्र अनावरणकर्त्ता	: पण्डित शिखरचंदजी जैन, विदिशा
पं.टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्त्ता	: श्री सौरभजी जैन, मेरठ
गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्त्ता	: श्री शांतिलालजी जैन, भीलवाड़ा

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राज. प्रांतीय अधिवेशन

शनिवार, दिनांक 23 सितम्बर 2017

अध्यक्ष : डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, उदयपुर

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता

● श्रीमती मधु गांधी ध.प. श्री वीरेन्द्र गांधी एवं सुपुत्र विवेक गांधी परिवार मंदसौर ● श्री संजयजी दीवान, सूरत ● श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन राजपुर रोड़, दिल्ली ● श्रीमती सुनीता ध.प. प्रेमचंद बजाज एवं सुपुत्र तन्मय, ध्याता बजाज, कोटा ● श्रीमती शशि सुरेशचन्द जैन, शिवपुरी ● श्री वीरेन्द्रकुमार कनकमाला हरसौरा, कोटा ● श्री चम्पालाल भभूतमल भण्डारी परिवार, बैंगलोर ● श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल, कोलकाता ● श्री निशिकांतजी औरंगाबाद

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:	5.00 से 5.30	सुप्रभात मंगलगायन
	5.30 से 6.15	प्रौढकक्षा
	6.30 से 7.00	डॉ.भारिल्लजी के प्रवचन (जिनवाणी चैनल)
	7.00 से 7.20	गुरुदेवश्री के प्रवचन (अरहंत चैनल)
	7.30 से 8.30	पूजन एवं विधि-विधान प्रशिक्षण
	9.00 से 9.40	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	9.40 से 10.20	सी.डी.प्रवचन (गुरुदेवश्री)
	10.20 से 11.20	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
दोपहर	1.45 से 5.15	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
सायं	6.30 से 7.15	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	7.15 से 7.40	जिनेन्द्र भक्ति
	7.45 से 8.30	प्रथम प्रवचन - आमंत्रित विद्वानों द्वारा
	8.30 से 9.30	प्रवचन - ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना

विद्वान एवं उनके विषय

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	दृष्टि का विषय
ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना	द्रव्य-गुण-पर्याय एवं सामान्य श्रावकाचार
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री	प्रवचनसार ज्ञानाधिकार एवं चार अभाव
डॉ. वीरसागरजी शास्त्री	सर्वज्ञसिद्धि एवं देवागम स्तोत्र
डॉ. राकेशजी शास्त्री	प्रमाण का विषय व फल एवं क्रमबद्धपर्याय
पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील	प्रमाण का प्रामाण्य एवं गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व का स्वरूप
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा	तीन लोक का स्वरूप एवं नैगमादि सप्त नय
डॉ. योगेशजी शास्त्री	हेतु/हेत्वाभास एवं परीक्षामुख (1-2 अध्याय)
पण्डित पीयूषजी शास्त्री	सात तत्त्व का अन्यथास्वरूप एवं व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि
पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री	मंगलाष्टक/महावीराष्टक एवं देव-शास्त्र-गुरु
डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री	14 गुणस्थान एवं पंचभाव
पण्डित अच्युतकान्त शास्त्री	निमित्त-उपादान

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

● श्री पराग नेमिचन्द अर्पल, औरंगाबाद ● श्री सिद्धार्थकुमार दोशी, रतलाम ● श्री कमलकुमारजी बड़जात्या मुम्बई ● श्रीमती प्रेरणा दोशी ध.प. पारस जैन उज्जैन ● श्री ताराचंदजी सौगानी, जयपुर

शिविर के शिरोमणी संरक्षक — श्रीमान् प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

शिविर के परम संरक्षक

- जयकुमार डॉ. विजयलक्ष्मी, डॉ. रैना जैन कोटा, विधा-ऋषभ खमेसरा टोरन्टो (कनाडा), भानुकुमार जैन एवं श्रीमती बादामबाई जैन कोटा
- श्रीमती वरजूबाई ध. प. स्व. श्री दलीचन्दजी जैन हथाया, मु.थाना, घाटकोपर
- श्री महावीर दि. जैन मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट, सैक्टर नं. 11, हिरणमगरी, उदयपुर
- श्री सोहनराज कान्तीलाल जयन्तिलाल पुत्र श्री तखतराजजी परिवार, कोलकाता
- श्रीमती कमलाबाई ध. प. श्री नेमीचन्दजी पाण्डया (गोहाटीवाले), कलकत्ता
- श्रीमती बसन्तीबेन धर्मपत्नी स्व. श्री हरकचंदजी छाबड़ा सुपुत्र जुगलकिशोर, कपूरचंद, कैलाशचन्द, अशोककुमारजी छाबड़ा (सीकर वाले), मुम्बई -सूरत
- स्व. श्रीमती मानकुंवरबाई ध.प. श्री माधोसिंहजी की स्मृति में सुपुत्र श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन, जयपुर
- स्व. श्री मदनलालजी कालिका सीकरवालों की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र श्री भागचन्दजी सुपौत्र श्री भावेश व मनीष कालिका (छाबड़ा), उदयपुर
- श्रीमती कुसुम चौधरी ध.प. श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी, किशनगढ़
- श्रीमती राजकुमारी ध.प. श्री महावीरप्रसादजी सरावगी, कलकत्ता
- श्री अजितकुमारजी तोतूका सन्नी-गौरव फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर
- श्रीमती सुन्दरबाई ध. प. श्री लखमीचन्दजी जैन (सागरवाले), जयपुर
- श्रीमती सुशीलादेवी ध. प. श्री शांतिलालजी जैन (अलवरवाले), जयपुर
- श्रीमती फूलदेवी ध. प. स्व. श्री लादूलालजी पहाड़िया, किशनगढ
- स्व. श्रीमती शकुन्तलादेवी की पुण्य स्मृति में श्री जवाहरलालजी जैन, जयपुर
- श्रीमती कंचनदेवी ध.प. श्री चिरंजीलालजी कासलीवाल, सेठी कॉलोनी, जयपुर
- श्रीमती प्रेमलता सेठिया ध.प. श्री अभयकरणजी सेठिया, सरदारशहर
- श्री प्रमोदकुमार आलोककुमारजी जैन, जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर
- श्री विमलकुमारजी जैन, नीरू केमीकल्स, विवेकविहार, दिल्ली
- श्रीमती मनोरमादेवी ध. प. श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया, पीसांगन
- श्रीमती निर्मला ध.प. श्री सूरजमलजी हमण, रामगंजमंडी
- श्रीमती ज्योति डॉ.अरुण दोडल हिंगोलीवाले घाटकोपर, मुम्बई
- श्री गम्भीरमलप्रकाशचन्दजी जैन सेमारीवाले, अहमदाबाद
- श्री अशोककुमारजी जैन अरिहंत कैपिटल प्रा.लि., इन्दौर
- श्री मगनमल सौभागमल पाटनी चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई
- श्री भंवरलालजी मोतीलालजी भोरावत, मुम्बई
- श्री नरेशकुमार हरीशकुमार जैन, अहमदाबाद
- मातुश्री देवकीबेन लवजीभाई गाला, मुम्बई
- श्री भगवानजी भाई कचराभाई शाह, लन्दन
- अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट, सांताक्रूज, मुम्बई
- श्री गम्भीरमलजी जैन, विज्ञानगर, कोटा
- श्रीमती अनिला शरदभाई शाह, यू.एस.ए.
- श्री भंवरलालजी लिखमावत, भिण्डर

शिविर के संरक्षक

- श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट पंचबालयति दि. जैन मंदिर, साधनानगर, इन्दौर
- श्रीमती कंचनदेवी ध. प. जुगराजजी कासलीवाल, कोलकाता
- श्री मांगीलालजी चम्पालालजी राटिया थाणावाले, मुम्बई
- श्रीमती बसंतीबाई छीतरमलजी बाकलीवाल, पीसांगन
- श्री पन्नालालजी शान्तिलालजी कुरावलीवाले, मुम्बई
- श्री देवीलालजी कस्तूरमलजी कुरावलीवाले, मुम्बई
- श्री जेठमलजी लादूलालजी अजमेरा, भीलवाड़ा
- श्री नेमीचंदजी अजमेरा, बेगूं

शिविर के परम सहायक

1. श्रीमती मंजुलाबेन कविचन्द परीख, मुम्बई
2. कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट (ढाई द्वीप जिनायतन) इन्दौर
3. श्री सुनीलकुमार हजारीलालजी जैन सरोज स्टील, कोचीन

नोट : (1) शिविर में पधारने वाले सभी शिविरार्थीयों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी, आपके यहाँ से कितने व कौन -कौन भाई बहिन पधार रहे हैं - इसकी सूचना अवश्य देवें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। (2) रिक्शेवाले को बताने का पता : श्री टोडरमल स्मारक भवन, त्रिमूर्ति जैन मंदिर, कानोडिया कॉलेज के पीछे, ए-4, बापू नगर, गाँधीनगर रोड, जयपुर (3) कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015, फोन : 2705581, 2707458 फैक्स : 2704127 (4) मुम्बई -जयपुर सुपर फास्ट, भोपाल-जोधपुर पैसेंजर, इन्दौर-जयपुर सुपरफास्ट, इन्दौर-जोधपुर इन्टरसिटी, जबलपुर अजमेर सुपरफास्ट (दयोदय) आदि ट्रेने दुर्गापुरा स्टेशन पर रुकती हैं; इनसे आने वाले यात्री यहीं उतरें एवं ग्वालियर-उदयपुर इंटरसिटी गांधीनगर स्टेशन पर रुकती है, इससे आने वाले यात्री यहीं उतरें।

कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

निवेदक :

सुशीलकुमार गोदिका — अध्यक्ष

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल — महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण, पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर. 302015 (राज.)

0141-2705581, 2707458

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

5

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

गुणस्थान परिपाटी के अनुसार प्रथम गुणस्थानवालों का मरण **बाल-बालमरण** है। चतुर्थ गुणस्थानवालों का मरण **बालमरण** है। पंचम गुणस्थानवालों का मरण **बाल पण्डितमरण** है। छठवें से ग्यारहवें गुणस्थानवालों का मरण **पण्डितमरण** है और तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वालों का निर्वाण **पण्डित-पण्डितमरण** कहा जाता है।

प्रस्तुत कृति में उक्त पाँच मरणों में मात्र दूसरे और तीसरे मरण को अर्थात् चौथे और पाँचवें गुणस्थानवालों के समाधिमरण या सल्लेखना को विषय बनाया गया है।

अतः हम कह सकते हैं कि हमारी इस कृति का विषय मात्र अव्रती और अणुव्रती सम्यग्दृष्टियों की सल्लेखना है।

ध्यान रहे बारह व्रतों में अतिचारों की चर्चा के साथ ही सल्लेखना के अतिचार भी गिनाये हैं। यह भी सिद्ध करता है कि **यह सल्लेखना नामक व्रत मुख्य रूप से व्रती श्रावकों का है।**

यह व्रत धारण करने वाले आत्मार्थी भाई-बहिनों को उनकी कमजोरी के कारण जो अल्प दोष लग जाते हैं; उन्हें अतिचार कहते हैं। सल्लेखना व्रत में लगने वाले अतिचार इसप्रकार हैं –

''जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि[1]

जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबंध और निदान – ये पाँच सल्लेखना व्रत के अतिचार हैं।''

१. जीविताशंसा – सल्लेखना लेकर जीने की इच्छा रखना, जीविताशंसा नामक प्रथम अतिचार है।

२. मरणाशंसा – रोगादि के कष्ट से घबड़ा कर जल्दी मरने की इच्छा होना, मरणाशंसा नामक दूसरा अतिचार है।

वैसे तो प्रत्येक आत्मार्थी मुमुक्षु भाई-बहिन की भावना ऐसी होना चाहिए या होती है कि –

''लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।[2]''

सल्लेखना लेनेवाले को तत्काल मरने और अपरिमित काल तक जीने के लिए तैयार रहना ही चाहिए।

१. तत्त्वार्थसूत्र अध्याय-७, सूत्र ३७

२. जुगलकिशोरजी मुख्त्यार : मेरी भावना, छन्द ७

३. मित्रानुराग – मित्रों के साथ अनुराग होना, उन्हें बार-बार याद करना, मित्रानुराग नामक तीसरा अतिचार है।

४. सुखानुबंध – भोगे हुए सुखों (भोगों) को याद करना, सुखानुबंध नामक चौथा अतिचार है।

५. निदान – आगे के भोगों की चाह होना, निदान नामक पाँचवाँ अतिचार है।

ये सल्लेखना व्रत के पाँच अतिचार हैं। इन्हें जानकर तत्त्व चिन्तन के माध्यम से इनसे बचने का प्रयास करना चाहिये।

यह सल्लेखना व्रत तो व्रतियों का है – यह सोचकर अव्रतियों को इससे विरक्त नहीं होना चाहिये। उन्हें अपनी शक्ति के अनुसार इसका पालन करना ही चाहिये।

मृत्यु को बलात् आमंत्रण देने का नाम समाधिमरण नहीं है।

धर्मपालन करने की दृष्टि से सर्वोत्तम मानवजीवन को यों ही बलिदान कर देने का नाम धर्म नहीं है।

धर्म तो स्वयं को जानना है, पहिचानना है; स्वयं को जानकर, पहिचानकर स्वयं में अपनापन स्थापित करने का नाम है; स्वयं में ही समा जाने का नाम है, समाधिस्थ हो जाने नाम है।

देहादि संयोगों से एकत्व-ममत्व तोड़ने का नाम समाधि है। ध्यान रहे **समाधिमरण में मरण मुख्य नहीं है, समाधि मुख्य है। समाधि की तो** कोई बात ही नहीं करता; सभी मरण के बारे में ही सोचते हैं।

समाधि मूलतः उपादेय है। जीवन में भी और मरण में भी एकमात्र समताभाव, समाधि ही उपादेय है।

मरण तो आपतित है। एक बार जीवन में आता ही है; चाहे सहजभाव से आवे, चाहे उपसर्गादि कारणों से आवे; बस उसे सहज भाव से स्वीकार करना है। उसमें हमें कुछ करना नहीं है; वह तो जीवन के समान ही सहज है।

हम जीने के लिये तो सदा तैयार हैं ही; मरने के लिये भी हमें सहजभाव से तैयार रहना है।

अतिचारों की चर्चा में जीने की इच्छा के समान मरण की इच्छा को भी समाधिमरण का अतिचार कहा है।

हमारी भावना तो ऐसी होनी चाहिये कि –

''लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे।''

जिससे बचाव सम्भव न हो, ऐसी मृत्यु का अवसर आ जाय तो बिना खेदखिन्न हुये उसे सहजभाव से स्वीकार कर लेना ही समाधि मरण है, सल्लेखना है।

न तो मृत्यु को आमंत्रण देना ही समझदारी है और न आपतित मृत्यु से घबड़ाना, हर स्थिति को सहजभाव से स्वीकार करना ही समाधिमरण है, सल्लेखना है।

प्रश्न – एक ओर तो आप यह कहते हैं कि जबतक समागत बीमारी का इलाज संभव हो, आपत्ति का प्रतिकार संभव हो; तबतक समाधिमरण नहीं लेना चाहिये। पहले इलाज पर ध्यान दें, प्रतिकार पर ध्यान दें। जब स्थिति काबू के बाहर हो जाय और मरण अवश्यंभावी दिखे, तब समाधिमरण व्रत लेना चाहिये। यह तो एक प्रकार से जीने की ही इच्छा हुई।

इसीप्रकार जब मरण का ही व्रत ले लिया और क्रमशः भोजनादि का त्याग करना भी आरंभ कर दिया तो क्या यह मरण की भावना नहीं है? यदि है तो फिर आप जीने की इच्छा को और मरने की इच्छा को अतिचार क्यों कहते हैं?

उत्तर – बहुत कुछ प्रयास करने के बाद जब आप इस निर्णय पर पहुँच गये कि अब बचना संभव नहीं है; तब तो आपने यह व्रत लिया है और अब जीवन की चाह होगी तो चित्त विभक्त होगा। चित्त का विभक्त होना ठीक नहीं। **विभक्तचित्त से किया गया कोई भी कार्य सफल नहीं होता।**

इसीप्रकार अत्यधिक पीड़ा के कारण जल्दी मृत्यु की कामना करना भी सहज जीवन और सहज मरणव्रत की सहज स्वीकृति नहीं है। अतः इन्हें अतिचार कहा है।

यह अज्ञानी जगत स्त्री-पुत्र, माँ-बाप, भाई-बहिन आदि चेतन परिग्रह एवं रुपया-पैसा, मकान-जायजाद आदि अचेतन परिग्रह तथा मुख्य रूप से शरीर को अपना माने बैठा है, उक्त संयोगों में ही रचा-पचा है। उन्हें जोड़ने और उनकी रक्षा करने में लगा है।

यदि इनमें से एक व्यक्ति या एक वस्तु का वियोग हो जाता है तो भी यह आकुल-व्याकुल हो जाता है। **मरण तो समस्त चेतन-अचेतन संयोगों के एक साथ वियोग का नाम है। अतः इस मरण का नाम सुनते ही अनन्त आकुल-व्याकुल हो जाना इस अज्ञानी जगत का सहज स्वरूप है।**

इस अज्ञानी जगत को मृत्यु में अपना सर्वनाश दिखाई देता है; इसलिये वह इसका नाम सुनते ही आकुल-व्याकुल होने लगता है।

इस अनित्य और अशरण जगत में इसे कोई शरण दिखाई नहीं देता। कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो इसे मृत्यु से बचा ले।

''मरणं प्रकृति शरीरिणाम् – प्राणियों का मरना प्रकृति है, प्राकृतिक स्वभाव है।'' महाकवि कालिदास की उक्त सूक्ति के अनुसार मरना प्रकृति है। अतः मृत्यु आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों अवश्य होगी, बरसों टलने वाली नहीं है।

उक्त संयोगों में एकत्व के कारण, अपनेपन की मिथ्या मान्यता के कारण यह अज्ञानी जगत अनन्त दुखी है और यदि अपनी यह **मान्यता भविष्य में भी नहीं सुधारी तो अनन्त काल तक दुखी ही रहेगा।**

संयोगों का वियोग रोकना तो संभव नहीं है। अतः एकमात्र यही उपाय शेष रहता है कि जगत में जो कुछ भी जिस समय हो रहा है; हम उसके सहज ज्ञाता-दृष्टा रहें। न यह चाहें कि मैं न मरूँ, कभी न मरूँ और न यह चाहे कि मैं शीघ्र ही मर जाऊँ।

अनन्त सुख देने वाली सच्ची मान्यता तो यही है कि यदि मृत्यु का अवसर आ गया है, तो मरने के लिये तैयार और जीवित रहने की सहज अनुकूलता हो तो जीने के लिये तैयार। इसी का नाम समाधिमरण है।

समाधिमरण में न जीने की चाह है और न मरने की चाह है।

प्रश्न – सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना तो कोई नहीं चाहता। फिर भी आप कहते हैं कि मरने की इच्छा नहीं करना, शीघ्र मरने की इच्छा नहीं करना। मरने की इच्छा क्यों नहीं करना? मरने के लिये ही तो समाधिमरण लिया है।

उत्तर – मरने के लिये समाधिमरण नहीं लिया जाता। मरने से तो बचने के उपाय किये जाते हैं। **जब जीने का कोई उपाय नहीं बचता, तब समाधिमरण लिया जाता है।**

जब समाधिमरण ले ही लिया तो फिर जीने की आकांक्षा उचित नहीं है, आकुलता का ही कारण है। इसलिये लिखा है कि जीने की इच्छा भी नहीं रखना।

बहुत कष्ट होने पर कभी-कभी शीघ्र मर जाने का भाव होता है। बहुत से लोगों को यह कहते आपने सुना होगा कि बहुत कष्ट हैं। जल्दी मौत आ जाये तो अच्छा है।

जगत के सहज परिणमन को सहज ही होने देना श्रेष्ठ है। उसमें कुछ फेरफार तो हम कर ही नहीं सकते, फेरफार करने की भावना भी नहीं रखना चाहिये - यहाँ तो यह कहा जा रहा है। (क्रमशः)

वेदी एवं शिखर शिलान्यास संपन्न

झालरापाटन (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान तत्त्वप्रचार समिति द्वारा एवं श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति झालरापाटन द्वारा दिनांक 19 व 20 अगस्त को भव्य वेदी एवं शिखर शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 19 अगस्त को श्रीजी की रथयात्रापूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् श्री 1008 सीमंधर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

दिनांक 20 अगस्त को प्रात: पूजन, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन एवं शिलान्यास सभा का आयोजन हुआ। शिलान्यास सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्रजी हरसौरा, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अनिलजी उज्जैन, श्री जवेरचंदजी मुम्बई, श्री अरुणजी बज कोटा थे। सभा का संचालन पण्डित नागेशजी पिड़ावा व पण्डित रतनजी शास्त्री कोटा द्वारा किया गया। तत्पश्चात् शिलान्यास रथयात्रा भव्य गाजे-बाजे के साथ श्री सीमंधर जिनालय नेमिनगर लालबाग पहुंची, जहाँ वेदी शिलान्यास एवं शिखर शिलान्यास संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा, पण्डित सचिनजी शास्त्री कोटा, पण्डित शौर्यजी शास्त्री कोटा एवं मुमुक्षु मण्डल झालरापाटन का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 14 से 19 नवम्बर 2017 तक श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन झालरापाटन में होने जा रहा है, अत: सभी साधर्मीजन पधारकर लाभ लें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 अग.से 6 सित.	भोपाल (कोहेफिजा)	दशलक्षण पर्व
17 से 24 सितम्बर	जयपुर	शिक्षण शिविर
1 से 5 अक्टूबर	श्रवणबेलगोला	विद्वत् सम्मेलन
15 से 19 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली

यदि हमें भी आत्मा का उत्थान करना है तो सहज व सरल वृत्ति का बनना होगा। **– पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, पृष्ठ 14**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

महाविद्यालय का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित जिला स्तरीय खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा अनेक पुरस्कार प्राप्त किये गये, जिसमें **अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता** में पक्ष में प्रथम स्थान पवित्र जैन एवं विपक्ष में प्रथम स्थान आयुष जैन, **हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता** में विपक्ष में प्रथम स्थान आप्त जैन एवं पक्ष में द्वितीय स्थान अंकुर जैन, **संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता** में पक्ष में प्रथम स्थान संयम जैन ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त **बैडमिंटन** में हितंकर जैन, अकलंक जैन, आप्त जैन, प्रतीक जैन, अनिमेष जैन का चयन किया गया। ये सभी छात्र राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

शोक समाचार

(1) विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री अशोककुमारजी घड़ीवालों का देहावसान दिनांक 24 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के पिताजी थे।

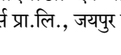

(2) सागर (म.प्र.) निवासी श्री कृष्णचंदजी का देहावसान दिनांक 24 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे। शास्त्राभ्यास करने वालों के प्रति आपको अत्यंत वात्सल्य था। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित अभयकुमारजी देवलाली एवं पण्डित राकेशजी नागपुर के ससुरजी थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com